मौन से जो
कहा जा सकता
है वो शब्दों से
नहीं कहा जा सकता।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह देहरादून बृहस्पतिवार 30 जुलाई 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

तीव्र मतभेद सामने आए

दक्षिण यूरोपीय देश– इटली और स्पेन इसके पक्ष में थे, लेकिन फ्रूगल (कंजूस) फोर के नाम से जाने जा रहे चार देश– ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, स्वीडन और नीदरलैंड्स इसके तीव्र विरोध में सामने आ गए। हाल यह रहा कि बैठक का समय बार–बार बढ़ाया जाता रहा, लेकिन सहमति की कोई सूरत बनती नजर नहीं आई।

ममता शाह।

बेल्जियम की राजधानी ब्रसेल्स में चल रही यूरोपियन यूनियन की बैठक में जिस तरह के तीव्र मतभेद सामने आए हैं और जिन तीखे शब्दों के जरिये वे प्रकट हुए हैं, वह कोई सामान्य बात नहीं है। ईयू देशों की इस बैठक में और बातों के अलावा 1800 अरब यूरो (2100 अरब डॉलर) के बजट और रिकवरी फंड पर भी बहस चल रही है।

कोविड–19 से जूझते जरूरतमंद पूर्वी–दक्षिणी यूरोपीय देशों के लिए रिकवरी फंड को जरूरी माना जा रहा है। सैद्धांतिक रूप से सभी देश इस पर सहमत भी थे, लेकिन जैसे ही बैठक शुरू हुई और उसमें फ्रांस तथा जर्मनी की ओर से यह प्रस्ताव रखा गया कि रिकवरी फंड (750 अरब यूरो) का अधिक से अधिक हिस्सा (500 अरब यूरो) महामारी से पीड़ित देशों को सहायता के रूप में दिया जाए, इस पर मतभेद उभरने लगे। दक्षिण यूरोपीय देश– इटली और स्पेन इसके पक्ष में थे, लेकिन फ्रूगल (कंजूस) फोर के नाम से जाने जा रहे चार देश– ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, स्वीडन और नीदरलैंड्स इसके तीव्र विरोध में सामने आ गए।

नीदरलैंड्स के प्रधानमंत्री मार्क रट ने साफ–साफ कह दिया कि अपनी संसद की मंजूरी के बगैर वे अपने देश पर कर्ज का कोई बोझ नहीं डाल सकते, वह भी इसलिए कि सदस्य देशों को कैश बांटना है! इस पर हंगरी के दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री विक्टर ओर्बान ने कहा कि मार्क रट पुराने कम्युनिस्ट शासकों जैसा आचरण दिखा रहे हैं। निजी टिप्पणियों से भरी यह तीखी बहस थमने का नाम ही नहीं ले रही थी।

विवाद रिकवरी फंड की मात्रा पर ही नहीं, उसके साथ जोड़ी जाने वाली शर्तों पर भी था। हाल यह रहा कि बैठक का समय बार–बार बढ़ाया जाता रहा, लेकिन सहमति की कोई सूरत बनती नजर नहीं आई। शनिवार को समाप्त होने वाली बैठक रविवार और फिर सोमवार को भी चलती रही, लेकिन आखिर तक इसमें शामिल नेता यह कहने की स्थिति में नहीं थे कि उनके बीच सहमति बन ही जाएगी।

लक्जमबर्ग के प्रधानमंत्री जेवियर बेटेल ने यहां तक कह दिया कि ईयू मीटिंग्स में शामिल होने के अपने सात साल के अनुभव में ऐसा तीखा मतभेद उन्होंने कभी नहीं देखा। बहरहाल, बैठक का अंत चाहे जैसा भी हो, इन चार दिनों में इसमें जो कुछ होता हुआ दिखा है वह इस मान्यता को ध्वस्त करने के लिए काफी है कि ब्रिटेन के अलग होने के बाद ईयू का सबसे बड़ा संकट खत्म हो गया और अब उसे शांति तथा सहमति से चलाना मुश्किल नहीं होगा। 1993 में ईयू का गठन राष्ट्रों की सीमाएं कमजोर पड़ने की दिशा में एक ठोस कदम माना गया था।

दुनिया के एक ग्लोबल विलेज बनने के सपनों को इसने पंख लगा दिए थे। यूरोपीय संसद की यह बैठक अभी खत्म नहीं हुई है, लेकिन महामारी जैसे पहले वास्तविक संकट के सामने इसमें नजर आई कटुता उन सबके लिए तकलीफदेह है जो राष्ट्रों की सीमाओं में बंटी तनावग्रस्त दुनिया की जगह आपसी सहयोग, विश्वास और प्रेम से संचालित विश्व के सपने से जुड़ाव महसूस करते रहे हैं।

इच्छाओं की पूर्ति

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। हमारी कोशिश यही होती है कि हम अपनी इच्छाओं को पूरा कर पाएं। हमारा जीवन ऐसे ही गुजरता चला जाता है, जिसमें हम एक के बाद एक अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में ही लगे रहते हैं। समस्या यह है कि हमारी इच्छाओं का कोई अंत ही नहीं होता। जब हमारी एक इच्छा पूरी हो जाती है, तो हमारे अंदर दूसरी पैदा हो जाती है। जब वो भी पूरी हो जाती है, तो हमारे अंदर कोई और इच्छा उत्पन्न हो जाती है, और उसके बाद फिर कोई अन्य इच्छा जाग जाती है। इस तरह हमारा जीवन गुजरता चला जाता है। यह सच है कि आधुनिक संस्कृति हमारे अंदर नई–नई इच्छाओं को पैदा करती है। हम पोस्टरों, होर्डिंग्स, टी.वी. और रेडियो पर रोज नए–नए विज्ञापन देखते हैं।

संपादकीय

जब मनमोहन मिले

राष्ट्रपति भवन ने रहस्यमय चुप्पी साधी हुई थी और कलाम शांत एवं गंभीर मुद्रा में दिख रहे थे। एक दिन सुबह नाश्ते पर उनके ओएसडी के साथ एसएम खान भी मौजूद थे, जब कलाम ने स्वीकार किया कि उन्हें अधिसूचना पर हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए थे। उन्होंने अपने अपने भाई को सूचित कर दिया है कि रामेश्वरम स्थित आवास में एक कमरा उनके लिए भी सुरक्षित रखें। सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी के बाद बूटा सिंह को त्यागपत्र देना पड़ा।

7 अक्टूबर को मुख्य न्यायाधीश वाली बेंच ने विधानसभा भंग करने के फैसले को असंवैधानिक बताकर एक नए संकट को जन्म दे दिया। फैसले में इसका भी उल्लेख किया गया कि एलजेपी के 10 विधायकों के समर्थन के बाद 24 मई को सरकार बनाने का दावा मजबूत बनता, इसी को रोकने के लिए 21 मई को विधानसभा भंग करने का फैसला किया गया। पूरे घटनाक्रम पर कलाम पैनी नजर रखते हुए जानकारी हासिल कर रहे थे और सुप्रीम कोर्ट में सरकार के पक्ष को भी वे कमजोर मान रहे थे। अपने इस निष्कर्ष की जानकारी उन्होंने प्रधानमंत्री के साथ भी साझा की। कुछ कानून और संविधान के विशेषज्ञों ने कलाम की भी आलोचना प्रारंभ कर दी।

मनमोहन सिंह किसी सरकारी कार्य से राष्ट्रपति से मिलने गए तो कलाम ने अपने त्यागपत्र की इच्छा उनके सामने भी जाहिर कर दी। सिंह स्तब्ध थे और उन्होंने कहा कि ऐसी परिस्थिति में उनकी सरकार का भी तख्ता पलट हो सकता है। कलाम ने इस्तीफा न देने का अनुरोध स्वीकार किया, लेकिन अपनी डायरी में लिख दिया कि मैं पूरी रात सो नहीं पाया, मेरी भावनाओं से बड़ा मेरा देश के प्रति कर्तव्य है। लिहाजा मैं कोई संकट पैदा नहीं करूंगा।

राष्ट्रपति अब्दुल कलाम थे, जो किसी राजनैतिक दल या विचार से नहीं बंधे थे। कलाम विदेश यात्रा पर रवाना हो चुके थे। पहला पड़ाव रूस की राजधानी मास्को में था।

राष्ट्रपति की दुविधा

केसी त्यागी।

फरवरी 2005 में हुए बिहार विधानसभा चुनाव में लालू प्रसाद के दल को भारी क्षति हुई, हालांकि विपक्षी गठबंधन एनडीए भी बहुमत से दूर ही रहा। 243 के सदन में आरजेडी को 75 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा, जबकि नीतीश कुमार की अगुआई में एनडीए को 92 सीटें मिली थीं। राम विलास पासवान की पार्टी एलजेपी 29 सीट प्राप्त कर मजबूत स्थिति में थी। पासवान की पार्टी यूपीए में रहने के बाद भी लालू प्रसाद के विरुद्ध चुनाव मैदान में थी और किसी भी कीमत पर लालू प्रसाद के दल को समर्थन नहीं देंगे, इसी घोषणा के साथ चुनाव मैदान में उतरी थी।

रेल मंत्रालय को लेकर दोनों नेताओं के बीच तलवारें खिंच चुकी थीं। दोनों नेता एक दूसरे के लिए गला काट प्रतियोगी बन चुके थे। बिहार के राज्यपाल बूटा सिंह ने 6 मार्च को राष्ट्रपति शासन की घोषणा कर सदन को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया। 19 मार्च 2005 को लोकसभा और बाद में 21 मार्च को राज्यसभा ने भी इस पर अपनी मोहर लगा दी। 2005 के अक्टूबर चुनाव में नीतीश कुमार के चेहरे पर जब चुनाव हुआ तो जेडी(यू) की 88 और बीजेपी की 55 सीटें मिलाकर 145 हो गईं। लेकिन इससे पहले कुछ निर्दलीय और एलजेपी

विधायकों की बेचौनी बढ़ गई और 15 अप्रैल के आसपास 10 एलजेपी विधायकों ने कुछ निर्दलीयों के साथ मिलकर नीतीश कुमार के नेतृत्व में सरकार बनाने की प्रक्रिया तेज कर दी।

आरजेडी के दबाव में राज्यपाल ने राष्ट्रपति को पत्र लिखकर विधानसभा भंग करने की संस्तुति कर दी। राज्यपाल के संबोधन में दलबदल को प्रोत्साहन देकर विधायकों को लुभावने प्रलोभन देने का भी आरोप था। यद्यपि नीतीश कुमार ऐसे सभी प्रयासों से अपने को दूर कर चुके थे। उन्होंने जार्ज फर्नांडिस के आवास पर जेडी(यू) नेताओं की आवश्यक बैठक में इस प्रस्ताव को नकार दिया था कि कुछ विधायक पैसे की मांग कर रहे हैं। नीतीश कुमार ने स्पष्ट कर दिया कि वैसी परिस्थितियों में वे मुख्यमंत्री के दावेदार नहीं होंगे। इस बीच 22 अप्रैल को कैबिनेट ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी।

उस समय राष्ट्रपति अब्दुल कलाम थे, जो किसी राजनैतिक दल या विचार से नहीं बंधे थे। कलाम विदेश यात्रा पर रवाना हो चुके थे। पहला पड़ाव रूस की राजधानी मास्को में था। मास्को समय के मुताबिक रात के 10 बजे थे, जो इन मुल्कों में विश्राम करने का वक्त होता है। कलाम के प्रेस सूचना अधिकारी एसएम खान ने भी अपने संस्मरण में इसका उल्लेख किया है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी राष्ट्रपति से स्वीकृति देने के लिए निवेदन किया था। कलाम दुविधा और अनिर्णय की स्थिति में थे। उनके सामने उस समय सीमित विकल्प थे– एक, अपनी मंजूरी दे दें, दिल्ली लौटने तक इसे स्थगित रखा जाए, जिसमें एक सप्ताह से अधिक का समय हो सकता था और तीन, प्रस्ताव बगैर मंजूरी लौटा दिया जाए ताकि मंशा स्पष्ट हो जाए। अगर मंत्रिपरिषद चाहे तो दोबारा अपनी संस्तुति भेजे।

कलाम विवाद को अधिक तूल नहीं देना चाहते थे। हालांकि पूरे घटनाक्रम से वह बहुत व्यथित थे। वे चाहते थे कि नीतीश कुमार को एक अवसर देकर विधानसभा में विश्वास मत प्राप्त करने को कहा जाए।

अष्टयोग-5123

7	6	5		1	3	
	41		32		22	1
4	3	7			2	
	26		34	4	38	6
1	2				6	
	21		36	3	39	7
	1	2			4	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5122 का हल

3	5	7	1	6	2	4
7	37	6	37	2	29	3
2	4	3	7	5	6	1
6	31	1	28	4	32	5
4	6	5	2	1	3	7
1	28	4	27	3	33	2
5	1	2	3	7	4	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

बच्चों का व्यवहार अनियंत्रित न हो

मोहन। सभी पैरेंट्स को अपने बच्चे के थेरपिस्ट के साथ लगातार संपर्क में रहना चाहिए। उन्हें थेरपिस्ट द्वारा निर्धारित एक्टिविटीज को टाइम टेबल के मुताबिक करवाना चाहिए। निर्देश लगातार दोहराते हुए उन्हें वीडियोज और कहानियों से इन बच्चों को समझाना चाहिए कि इस वक्त उनसे क्या अपेक्षाएं हैं। उदाहरणार्थ– हाथ कैसे धोना है, इसके फायदे क्या हैं, इसे तस्वीरों, कहानियों और गानों के जरिए समझाया जा सकता है। पैरेंट्स को टाइम टेबल के हिसाब से ही ऐसे बच्चों की देखभाल की आदत विकसित करनी चाहिए, ताकि बच्चे ये अच्छे से जानते हों कि दिन में किस वक्त क्या होगा। यह तय करेगा कि बच्चों का व्यवहार अनियंत्रित न हो। ऑटिज्म पीड़ित बच्चों में टाइम टेबल अनिवार्य है।